MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY
AJMER

Format of outline of proposed Research Work

Sanshodhit Shodh Praroop

1. Name of Scholar (In English) : HEMLATA BARIYA

   (In Hindi) : हेमलता बारियाँ

2. Title of the Research Work :

   (In English) : A critical study of sensibility and art in the poetry of Hindi human poetess of Rajasthan : with special reference to the poetry of Dr. Swarnlata

   (In Hindi) : राजस्थान की हिन्दी कवयित्रियों के काव्य में संवेदना और शिल्प : डॉ. स्वर्णलता के काव्य के विशेष संदर्भ में

3. Location :

A. Institution / Department

   Where the work is to be done : Govt. P.G. College, Tonk (Raj.)

B. Geographical area of Investigation, if any : NIL

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचयात्मक महत्व एवं उद्देश्य

मनुष्य की आत्मा को जब कुछ कहने और भावों को अभिव्यक्त करने की इच्छा होती है तो वह शब्दों को माध्यम बनाता है। शब्दों का यही माध्यम कविता में संवेदना के रूप में प्रकट होता है। राजस्थान की कवयित्रियों की कविता रेत पर जलती दुपहरी और जाड़ें में फसलों पर पड़े हुए पालों की नियति एवं इस विभीषिका से उत्पन्न भावभूमि की कविता है, यह प्रतिवर्ष दुर्भाग्य की त्रासदी झेलते आदमी और तड़कती धरती की कविता है। यहां के जीवन संघर्ष को राजस्थान की कवयित्रियों ने अपनी कविता में उकेरा है।

''दिन दहाड़े भूख से नीलाम होती शर्म है।
भूख ही तो आदमी का धर्म है।
भूख बचपन, भूख यौवन,
भूख जीवन की हवा,
भूख में सिमटा बुढ़ापा
भूख मरघट की दवा।'' – रजनी मोरवाल

राजस्थान की अनेक कवयित्रियों जैसे सावित्री डागा, शकुन्तला तंवर, रजनी मोरवाल, जया गोस्वामी, सरस्वती माथुर, मीनाक्षी हूजा, प्रीता भार्गव, शारदा कृष्ण की कविताओं में व्यक्ति के अधिक सघन उत्पीड़क आवेगों और कामनाओं की निर्बोध स्वतंत्र अभिव्यक्ति हुई है। वह जिन्दगी के यथार्थ का जाना पहचाना पक्ष है इसलिये उसका एक उग्र, एक क्रांतिकारी पक्ष है।

राजस्थान की सामंतवाद की कविता रूढ़ियों, भाषा तथा शिल्प को ही नहीं बदलती, बल्कि जनता को नये समय बोध और मानवीय गरिमा का

अहसास कराने के लिए नया साहित्य, बदली हुई जनतांत्रिक कविता का सृजन भी करती है।

''अबकी तो जाना ही होगा देहरी के उस पार।
एक अंधेरे से लड़ना है हमको बारम्बार।
सदियों के संकट है, पल में
बोलो हल हो जाएं कैसे,
भीतर की तिड़की भीतों पर,
बीज स्वप्न बो जाए कैसे।'' – रेणु शाह

राजस्थान की कवयित्रियों के काव्य में संवेदना का भाव मुखरित हुआ है। उन्होंने अपनी कविता में मानवीय संवेदना विशेष कर नारी संवेदना को अपनी कविता का माध्यम बनाकर नारी समस्याओं को उजागर करने का सराहनीय प्रयास किया है। इनकी कविताओं में वैयक्तिक सुख–दुःख की सघनता या अंतरंगता एक महत्वपूर्ण तत्व है। अभिव्यक्ति में पैनापन है। मशीनीकरण से आक्रान्त जीवन की खटर–पटर के बीच, गिरती दीवारों और घुमड़ती आंधियों के बीच बहुत सा गर्द–गुबार, दबी कुचली हसरते, मचलते–ठुनकते, अरमान–सपने सभी को मानों स्वर मिल गया।

कविता 'किरण' की कविता ''वृद्धाश्रम'' में एक मां का दर्द बयां किया है

''नौ महीने तक गर्भ में मां
बच्चे का बोझ उठाती है
अपनी छाती से चिपका कर
अमृत पान कराती है
खुद गीले में सोती
सुखे में उसे सुलाती है।''

वहीं शकुन्ता सरूपरिया ने अपनी कविता ''कन्या भ्रूण की गुहार – ओ मेरी मां'' के द्वारा मां की विवशता को चित्रित किया है।

''मेरी सूरत देखी ना जानी,
मेरी कीमत कुछ ना जानी।
बहुज्ञा–अभिशाप समझ के,
कोख से फेंक देने की ठानी।''

कहना न होगा कि सामाजिक विसंगतियों और युग की विद्रूपताओं को भी राजस्थान की कवयित्रियों के काव्य में रागात्मक वाणी मिली है। युग एवम् परिवेश से संपृक्त हमारी आशा–निराशा, आकांक्षा–अपेक्षा, राग–विराग, हर्ष–विषाद, राजनीतिक और आर्थिक दशा–दिशा में अस्थिरता, समस्याओं व चुनौतियों से यातनापूर्ण संघर्ष, मन के भीतर का अलगाव, असंतोष, आक्रोश, अस्वीकृति, विद्रोह की छटपटाहट के भावों को भी सस्वर वाणी मिली है।

साहित्य सामाजिक यथार्थ की जीवन्त व्याख्या है इसलिए समाज के संस्पर्श से वह अछूता नहीं रह सकता। सामाजिक इकाई के रूप में वैयक्तिक जीवन के पारितोष, व्यक्ति के सामाजिक परिवेश, अन्तर्वैयक्तिक संदेहो, संदर्भो, सम्बन्धों और अन्तर्विरोध का वैविध्यपूर्ण स्वर ही सामाजिक गतिमानता का कारण भी बनता है और साहित्यक रचनाधर्मिता का प्रयोजन भी।

साहित्य और समाज का अविच्छिन्न संबंध है। समाज यदि आत्मा है तो साहित्य उसका शरीर है बिना आत्मा के साहित्य जीवित नहीं रह सकता और बिना साहित्य के समाज का स्पष्ट प्रतिबिम्ब नहीं देखा जा सकता। साहित्यकार समाज का ही एक अंग होता है उसे सामाजिक जीवन में ही अपने भावों विचारों को अभिव्यक्त करने की प्रेरणा मिलती है। संक्षेप में साहित्य सामाजिक चेतना का परिचायक और मानव मस्तिष्क का पोषक है समाज का साहित्य से और साहित्य का समाज से मौलिक संबंध है।

इसी मौलिक संबंध के कारण साहित्यकार अपने साहित्य में मानवीय संवेदनाओं को उजागर करता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रत्येक युग में मानवीय संवेदना के दर्शन किये जा सकते है।

सम् + वेदना अर्थात् समान वेदना किसी भी व्यक्ति को संकट के क्षणों में देखने पर हमारे भीतर विद्यमान एक ऐसा भाव जागृत होगा जिसके फलस्वरूप हम द्रवित होकर पर–पीड़ा को स्व–पीड़ा समझने लगते है इसी भाव एवं गुण का नाम संवेदना है। साहित्य में मानवीय संवेदना की गतिशीलता का क्रमिक विकास देखने को मिलता है।

कबीर का समाज दर्शन मानवीय संवेदना का अथाह सागर है कबीर का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराइयों से ग्रस्त था। अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति की ईमानदारी का गुण ही मानवीय संवेदना का आधार है–

''ऊंचे कुल का जन्मिया करनी ऊंच न होय।
सुबरन कलस सुरा भरा साधु निन्दत सोय।।'' –कबीर

भक्ति काल के संत कवि यथा तुलसी, पीपा, सुरदास, मीरा, रामानन्द, दादूदयाल जैसे सभी कवियों के काव्य में मानवीय संवेदना दृष्टिगत होती है।

हिन्दी पुनर्जागरण काल में भारतेन्दु जी ने समाज की दुर्दशा का चित्रण किया है उससे पाठक के ह्रदय में एक टीस का जन्म होता है–

''रोबहु सब मिलि आबहु भारत भाई।
हा–हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।।''

छायावादी काल के चार स्तंभ प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना और करुणा की प्रधानता मिलती है और वेदनानुभूति की अनुभव जनित पीड़ा को अभिव्यक्त करने के कारण ही महादेवी आधुनिक मीरा कही जाती है।

प्रगतिवादी युग में लिखित काव्य भी मानवीय संवेदना पर आधारित है। इसमें काव्य का नायक श्रमिक, कृषक, मजदूर एवं शोषित वर्ग है–

''श्वानों को मिलता वस्त्र, दूध
भूखे बालक अकुलाते है।
मां की छाती से चिपक–ठिठुर
जाड़े की रात बिताते है।।'' – दिनकर

निराला की रचनाओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता के साथ ही मानवीय संवेदना का भाव भी मुखरित हुआ है। वह एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते है जो शोषण मुक्त हो जहां अन्याय एवं अत्याचार के लिए कोई स्थान न हो।

''चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी
सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे
कुत्ते भी है अड़े हुए।'' – निराला

''वह तोड़ती पत्थर ....।'' – निराला

नागार्जुन की यथार्थ चेतना व लोक दृष्टि को भी हिन्दी साहित्य विस्मृत नहीं कर सकता। इनके काव्य में मानवीय संवेदना का अनुशीलन हुआ है। ''अकाल और उसके बाद'' कविता इसी गुण पर आधारित है। नागार्जुन मानवीय संवेदना के सशक्त हस्ताक्षर है।

''कई दिनों तक चुल्हा रोया ....।'' – नागार्जुन

प्रयोगवादी कवियों ने आधुनिक मानव के जीवन में विद्यमान यातना, घुटन, सन्त्रास, कुण्ठा, द्वन्द्व और निराशा को अपने काव्य का विषय बनाया। अज्ञेय, शरद देवड़ा, भारत–भूषण अग्रवाल के काव्य इसके ज्वलंत उदाहरण है जिन्होंने मानवीय संवेदना को आधार बनाया। समकालीन हिन्दी कविता में जीवन से सीधा साक्षात्कार है। उसमें जीवन की खीझ, असंतोष, निराशा, कड़वाहट के स्वर अधिक है। समकालीन कविता उन्हीं अनुभूतियों को

अभिव्यक्ति देती है जो जीवन की निर्भय वास्तविकताओं से मन में उभरती है। विश्वनाथ तिवारी, रघुवीर सहाय, धूमिल, लीलाधर, जंगूड़ी, विष्णु खरे का काव्य इसी श्रेणी में आता है।

छठे दशक में नई कविता के साथ ही नवगीत आस्तित्व में आया। जिसमें वर्तमान विसंगतियों का चित्रण और लोक जीवन की अभिव्यक्ति हुई। रामदरश मिश्र, डॉ. शम्भूनाथ सिंह, नईम, मधुसूदन साहा का काव्य नवगीत परम्परा के अन्तर्गत ही आता है।

राजस्थान की रचनाकार वर्तमान समय में मानवीय संवेदना विशेषकर नारी संवेदना के लिये नया ताना बाना बुनने के लिये निरन्तर संघर्षशील रही डॉ. स्वर्णलता के लेखन का सिलसिला बचपन से अब तक जारी है इनकी साहित्य के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठिता पत्रिका सरस्वती में पहली कविता के द्वारा अभिव्यक्ति की यात्रा आरम्भ हुई जिसने वैचारिक चेतना को गति तथा ऊर्जा प्रदान की, जिसमें संवेदनाएं सूक्ष्म रूप धारण कर अक्षर–अक्षर ढलती रही। विषमताओं को निरस्त करने के लिए निरन्तर संषर्घरत रहना सहज नहीं परन्तु आस्तित्व की तलाश के लिए जरूरी है यह मानते हुए भावों, संवेदनाओं, अनुभूतियों, संवेगों को अपनी लेखनी के माध्यम से डॉ. स्वर्णलता ने रूपायित किया है।

आप सिद्धहस्त कवयित्री है इनकी भाव दृष्टि बहुमुखी है और भाषा में संक्षिप्तीकरण है। इनकी कविताओं में दार्शनिकता एवम् गंभीर चिन्तन के सहज ही दर्शन होते हैं। डॉ. स्वर्णलता की कलम से प्रसूत निबंध संग्रह ''रोशनियों का सैलाब'' एक चौकाने वाला इश्तिहार नहीं बल्कि सोच को कुरेदने वाला दस्तावेज है। यह निबन्ध जहां एक ओर पुरुष व नारी के बीच के संबंधों व उनके बीच अनचाही बढ़ती खाई के सोच का नजरिया देने वाला है। वहीं दूसरी ओर ''झील के आँचल में'' काव्य संग्रह उनकी रचनाधर्मिता का शीर्ष बिन्दु कहा जा सकता है। इन कविताओं में घनीभूत

पीड़ा की जो भावप्रवण अभिव्यक्ति है, वही कवयित्री को जनसंबेघ बनाती है। यह घनीभूत पीड़ा निजी भी है और समाज की भी है, वर्तमान समय की भी है–

''आघात हो चाहे गहरे,
बढ़ना कटीले पथ पर,
बिना रूके–बिना चुके।''

डॉ. स्वर्णलता ने आज के मानव की जीने की वजह को अपनी कविता के माध्यम से इस प्रकार प्रकट किया है –

''कटीली फसल के कांटे
चहुँ ओर दर्द बांटे,
जिस पर हो भरोसा भारी
राह तकत गुजर जाती।''

इनकी कविताओं में इंसानी रिश्तों के दरकनें का दर्द है, जिन्दगी की फितरतों का दर्द है, आपसी विश्वास और भरासों के टूटने का दर्द है, प्रकृति की विकृति बनने का दर्द है, जिन्दगी में कुछ कीमती चीज के खो जाने का दर्द है, अपने किरदारों में हुई खामियों का दर्द है, स्वप्नों के स्वप्न रह जाने का दर्द है अर्थात् इनका संपूर्ण काव्य मानवीय संवेदना से परिपूर्ण है–

''बेवजह बढ़ाते है मुश्किलें
रिश्तों के भरम
होता नहीं जहाँ अपनापन'
उनकी शर्त।''

इन्होंने मानवीय संवेदना, भावो, उद्वेगो को प्रकृति के माध्यम से अपनी कविताओं में व्यक्त किया है–

''बदली झंझाओं ने हवाओं की दिशाएँ,
अदृश्य में तैरती सलवटी सदाएँ
जिन्दगी की कशमकश में
खोया
अन्तर – हास।''

अपनी समस्त कविताओं में इन्होंने मनोविश्लेषणवाद को आधार बनाया है जिसमें दो प्रकार की प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन है– एक नियतिवाद व दूसरा आशावाद। भावपक्ष, कलापक्ष की ओर अवलोकन करें, तो रचनाकार का सौन्दर्य–बोध यत्र–तत्र दिखाई देता है। कविताएँ दिशा बोध भी है और युगबोध भी है। कविताओं में प्रेम, करूणा, पारदर्शिता का परिपाक हुआ है। इनका आंतरिक बोध निजी संसार को चैतन्य रूप देता है।

दूरदर्शन–आकाशवाणी से कविता, कहानी, वार्ताओं, परिचर्चाओं के प्रसारण में आपकी नियमित सहभागिता रही है। अनगिनत पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. स्वर्णलता राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, वर्धा के सदस्य पद पर सुशोभित है। आपका हिन्दी, संस्कृत के अतिरिक्त उर्दू, फारसी का ज्ञान भी रोचकता में वृद्धि करता है। सारांश स्वरूप यह कहा जा सकता है कि भावों, संवेदनाओं से परिपूर्ण डॉ. स्वर्णलता ने अपनी लेखन के माध्यम से काव्य को नया रूप दिया है इन्होंने साहित्य और समाज सेवा व मानवीय संवेदना को अपना लक्ष्य मान एक मौन साधक के रूप में अपनी पहचान दर्ज की है।

''प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य एवं आयाम''

1. राजस्थान की हिन्दी कवयित्रियों के काव्य में संवेदना और शिल्प के महत्व को स्पष्ट करना।

2. डॉ. स्वर्णलता के काव्य में मानवीय संवेदना की भूमिका को स्पष्ट करना।

3. संवेदना और सृजनता के अहम रिश्ते के मजबूत पक्ष को उभारना।

4. वर्तमान परिदृश्य में मनुष्य की निराशा, कुण्ठा, सन्त्रास की भावना के निराकरण हेतु मानवीय संवेदना के महत्त्व को स्पष्ट करना।

5. काव्य में मानवीय संवेदना के माध्यम से आनंद व कल्याण का उद्भव व मनोविकारों का अंत।

6. मानवीय संवेदना से परिपूर्ण काव्य का मानव मात्र से साक्षात्कार करवाना।

7. हिन्दी साहित्य के इतिहास में मानवीय संवेदना की विषय व्यापकता को स्पष्ट करना।

8. डॉ. स्वर्णलता के काव्य में वर्णित मानवीय संवेदना, अनुभूति, गंभीर चिंतन को जनमानस तक पहुंचाना।

9. विषमताओं को निरस्त करने के लिये निरन्तर प्राणी मात्र के लिये संघर्षशील रही रचनाकार डॉ. स्वर्णलता के प्रेरणास्पद जीवन को प्रस्तुत करना।

5. Review of Work Already Done on the Subject of Proposed

शोध संदर्भित साहित्य का सिंहावलोकन

समकालीन मानवीय संवेदना पर आधारित विभिन्न लेखकों व कवियों/कवयित्रीयों के कृत्तित्व एवम् व्यक्तित्व पर कई शोध कार्य हुए है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध विषय डॉ. स्वर्णलता के काव्य में मानवीय संवेदना के अनुशीलन में चयन के दौरान निम्नलिखित साहित्य ने अपनी सीमाओं के साथ शोधार्थी का ध्यान आकर्षित कियाः—

श्वसनी, मित्तल के. (2016 ई.) — ''हिमांशु जोशी के उपन्यासों में मानवीय संवेदना'' इस अध्ययन के माध्यम से मानवीय संवेदना के महत्त्व को स्पष्ट किया गया।

मोरी, पूनम के. (2016 ई.) — ''जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में दलित चेतना एक अनुशीलन'' इस अध्ययन में दलित की मनोदशा का वर्णन किया गया है।

अंसारी, नजमा एम. (2011 ई.) — ''उपन्यासकार शिवानी संवेदना और शिल्प'' इस अध्ययन में उपन्यासकार शिवानी के काव्य में व्याप्त मानवीय संवेदना व उनके रचना शिल्प को प्रस्तुत किया गया है।

बालकृष्णन, ज्योति श्री (2013 ई.) — ''हिन्दी उपन्यासों में चित्रित नारी समस्यायें : उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, शशि प्रभा शास्त्री के उपन्यासों के विशेष संदर्भ'' इस अध्ययन में नारी को समाज में किन—किन समस्याओं से रूबरू होना पड़ता है का उल्लेख हुआ है।

थॉमस, मैथ्यू (2013 ई.) – ''अमृत लाल नागर के उपन्यासों में अभिव्यक्त मानवतावादी जीवन बोध'' इस अध्ययन में नागर जी के उपन्यासों में मानवतावादी दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है।

धोनगडे, भारती बालकृष्णन (2014 ई.) – ''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवम् शिल्प'' इस अध्ययन में नासिरा शर्मा के साहित्य में संवेदना के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

वधेर, आर.एम. (2016 ई.) – ''दलित विमर्श एवम् ओमप्रकाश वाल्मिकी का साहित्य'' इस अध्ययन में ओमप्रकाश वाल्मिकी के दलित साहित्य की विशिष्टताओं को स्पष्ट किया गया है।

भारद्वाज, कंचन (2014 ई.) – ''आधुनिक हिन्दी स्त्री लेखन के भाषा और स्त्री का मुक्ति संघर्ष : प्रतिनिधि रचनाकारों और रचनाओं के संदर्भ में'' इस अध्ययन में नारी की मुक्ति के संदर्भ में विविध पक्षों को प्रस्तुत किया गया है।

भादौरिया, कविता (2014 ई.) – ''सुषमा मुनीन्द्रकृत कहानी संघर्ष अंतिम प्रहार का स्वप्न तथा आस्तित्व में निहित मानवीय संवेदना सामाजिक परिप्रेक्ष्य में'' इस अध्ययन में मानवीय संवेदना के सामाजिक पक्ष को कहानी के माध्यम से प्रकट किया गया है।

शर्मा, ज्योति जे. (2014 ई.) – ''कथाकार निर्मल वर्मा : संवेदना विश्व और अभिव्यक्ति'' इस अध्ययन में संवेदना की अभिव्यक्ति समाज/विश्व के परिप्रेक्ष्य में की गई है।

ओवेद्रा, भरत कुमार जे. (2015 ई.) – ''नवम् दशक के प्रमुख हिन्दी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी जागरण'' इस अध्ययन में नारी मुक्ति को महिला उपन्यासकारों के माध्यम से दर्शाया गया है।

सिंह, पायल एल. (2015 ई.) – ''हिन्दी और गुजराती दलित कहानियों में नारी संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन 1980–2008'' इस अध्ययन में नारी संवेदना को दलित कहानियों के माध्यम से जीवन यथार्थ को विभिन्न कोणों से स्पष्ट किया गया है।

लोधी, अजय सिंह (2015 ई.) – ''हिन्दी दलित साहित्य में विद्रोह पीड़ा तथा जीवन मूल्यों की बहुआयामी दृष्टि'' इस अध्ययन में दलित की पीड़ा को सामाजिक रूप से अभिव्यक्त किया गया है।

भट्ट, कल्पना वी. (2015 ई.) – ''मन्नु भण्डारी की कहानियों में नारी संवेदना'' इस अध्ययन में नारी की संवेदना की यथार्थ रूप में अभिव्यक्ति की गई है।

चतुर्वेदी, अर्चना (2015 ई.) – ''हिन्दी के प्रमुख व्यंग्य नाटकों की सामाजिक चेतना का अनुशीलन'' इस अध्ययन में हिन्दी नाटकों के माध्यम से व्यक्ति की सामाजिक रूप से व्यक्त मानवीय संवेदना को प्रस्तुत किया गया है।

परमार, रामसिंह एन. (2015 ई.) – ''निराला के काव्य में मानवीया संवेदना'' इस अध्ययन में निराला जी, जो संवेदना के कवि माने जाते हैं के काव्य के परिप्रेक्ष्य में संवेदना के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

मैथ्यू, पी.जी. (2013 ई.) – ''नागार्जुन के काव्य में मानवतावादी चेतना'' इस अध्ययन में मानव/व्यक्ति की प्रत्येक पहलू पर उपस्थित चेतना की अभिव्यक्ति हुई।

सिंह, धर्मेश (2015 ई.) – ''समकालीन हिन्दी कविता में व्यवस्था विद्रोह एक समीक्षात्मक अध्ययन'' इस अध्ययन में कविता के माध्यम से समाज में हो रहे विद्रोह को प्रस्तुत किया गया है।

मिश्रा, ऋचा (2015 ई.) – ''कबीर एवं निराला के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन'' इस अध्ययन में कबीर के निराला द्वारा रचित काव्य के माध्यम से मानव की संवेदना, दर्द, भाव को दर्शाया गया है।

सिंह, विस्मिता (2015 ई.) – ''सुभद्रा कुमारी चौहान के समग्र साहित्य का अनुशीलन'' इस अध्ययन में सुभद्रा कुमारी के साहित्य का विश्लेषण किया गया है।

पाल, सरोज (2015 ई.) – ''मीरा बाई के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन'' इस अध्ययन में मीराबाई के व्यक्तित्व व कृत्तित्व का विवेचन किया गया है।

त्यागी, उषा (2015 ई.) – ''पंत एवं महादेवी के काव्य में दर्शन एक तुलनात्मक अध्ययन'' इस अध्ययन में छायावाद के इन दोनों कवियों के काव्य की भावना को प्रकट किया गया है।

पाण्डेय, शिवप्रसाद (2014 ई.) – ''प्रसाद काव्य का कलापक्षीय अनुशीलन'' इस अध्ययन में प्रसाद के काव्य के कलापक्ष/सौन्दर्य को प्रस्तुत किया गया है।

शर्वा, कोमलसिंह (2014 ई.) – ''समकालीन हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में धूमिल के काव्य का अनुशीलन'' इस अध्ययन में धूमिल कवि के काव्य में व्यक्त यथार्थ भाव को स्पष्ट किया गया है।

पाठक, गीता (2014 ई.) – ''समकालीन काव्य परिदृश्य और नागार्जुन का काव्य'' इस अध्ययन में नागार्जुन के काव्य में व्यक्त यथार्थ चेतना की अभिव्यक्ति हुई है।

अग्रवाल, गोमती सुधा (2014 ई.) – ''समकालीन संदर्भ में मुक्तिबोध की कविता और चिन्तन का मूल्यांकन'' इस अध्ययन में मानवीय भावनाओं को विभिन्न कोणों के माध्यम से उजागर किया गया है।

तिवारी मंदाकिनी (2014 ई.) – ''श्री महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी व्यक्तित्व का अनुशीलन'' इस अध्ययन में नारी मुक्ति व नारी चेतना को दर्शाया गया है।

प्रस्तुत शोध में डॉ. स्वर्णलता के काव्य में मानवीय संवेदना : एक अनुशीलन में मानवीय संवेदना के विश्लेषण, महत्त्व के साथ ही डॉ. स्वर्णलता के जीवन के विभिन्न पक्षों एवं आयामों को स्पष्ट किया गया है।

6. Research Gaps Identified in the Proposed Field of Investigation

अनुसंधान के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कमियों की पहचान

हिन्दी काव्य परम्परा में मानवीय संवेदना विषय पर अब तक अनेक शोध कार्य किये जा चुके है। निर्मल वर्मा, महादेवी वर्मा, नासिरा जी के काव्य में काफी शोध कार्य हो चुका है परन्तु राजस्थान की सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. स्वर्णलता के काव्य में मानवीय संवेदना विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।

समकालीन परिवेश में एक ओर परम्परा है तो दूसरी ओर आधुनिकता व्यक्ति इन दोनों में बंधकर कुण्ठा, घुटन, निराशा, अवसाद को महसूस कर रहा है। ऐसे में आवश्यकता है मानवीय संवेदना को प्रकट करने की। व्यक्ति आधुनिकता की दौड़ में इस तरह शामिल हो गया है कि वह वर्तमान से असंपृक्त और कटा हुआ अनुभव करने लगा है।

जीवन में और साहित्य में भी व्यक्ति संबंधी चिन्ताएं भी उतनी ही जायज है जितनी समाज के बारे में। हम समाज या व्यक्ति का अमूर्तन नहीं कर सकते। आम आदमी की मनोदशा का चित्रण भी खास आम आदमी को केन्द्र में रख सजीव नहीं हो सकेगा।

प्रस्तुत शोध में सामाजिक जीवन में परम्परा और संवेदनाओं का औचित्य एवम् मानवीय संवेदनाएं और उनका अन्तर्द्वन्द्व तथा आदर्श और यथार्थ रूप का विवेचन, विश्लेषण करने का प्रयास किया जा रहा है।

7. Research Methodology

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य वर्तमान समय की राजस्थान की प्रसिद्ध रचनाकार ''डॉ. स्वर्णलता के काव्य में मानवीय संवेदना : एक अनुशीलन'' पर आधारित है। साहित्य में चित्रित सामाजिक तत्वों, परिवेश व नैतिक मूल्यों को पूरी तरह उजागर करने के लिये समाजशास्त्रीय पद्धति को अपनाना पड़ता है तथा लेखक एवम् पात्रों की मानसिकता व मनोदशा का अध्ययन करने के लिये मनोवैज्ञानिक पद्धति का सहारा लिया जाता है। अतः प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक, मनोवैज्ञानिक एवम् समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति पर केन्द्रित है। इसके अन्तर्गत डॉ. स्वर्णलता के काव्य में उपस्थित मानवीय संवेदना के विभिन्न संदर्भों, रूपों का विवेचन विश्लेषण किया जायेगा। एक शोधक की दृष्टि से स्वर्णलता जी के संपूर्ण काव्य में प्राणी मात्र के लिये अभिव्यक्त हुई संवेदना के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करना मेरा दायित्व रहेगा।

- शोध विषय हेतु डॉ. स्वर्णलता के काव्य का संकलन किया जायेगा।
- शोध विषय से संबंधित संदर्भ पुस्तकों एवं ग्रंथों से सामग्री संकलित की जायेगी।
- शोध विषय से सहसंबंधित पूर्ववर्ती शोधकों के ग्रन्थों से सूचनाएं प्राप्त की जायेगी।
- विषय विशेषज्ञों एवं पूर्ववर्ती शोधकों से परामर्श एवम् सूचनाएं प्राप्त की जायेगी।

- पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न लेखों, साक्षात्कार एवम् पत्राचार के द्वारा आवश्यक सामग्री जुटाई जायेगी।
- विभिन्न प्रकाशनों से प्रकाशित प्रस्तावित शोध संबंधी सामग्री का संकलन संचयन किया जायेगा।
- इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबसाइट जैसे Wikipedia, Google के जरिये सूचनाएं संकलित की जायेगी।

डॉ. स्वर्णलता के काव्य में मानवीय संवेदना : एक अनुशीलन

विषय–सूची **पृ.सं.**

प्रस्तावना

- राजस्थान की हिन्दी कवयित्रियों के काव्य में संवेदना और शिल्प
- विषय का विश्लेषण और महत्त्व
- विषय का सीमा क्षेत्र
- विषय से संबंधित शोध कार्य
- विषय की मौलिकता का महत्त्व

प्रथम अध्याय : डॉ. स्वर्णलता का संक्षिप्त परिचय

1.1 जीवन–वृत्त

1.1.1 जन्मतिथि

1.1.2 जन्मस्थान एवं नाम

1.1.3 बाल्यकाल

1.1.4 शिक्षा

1.1.5 साहित्य के प्रति रूझान

1.1.6 विवाह एवं पारिवारिक जीवन

1.1.7 जीविका का साधन एवं अध्यापन कार्य

1.1.8 व्यक्तित्व की विशेषताएं

1.2 कर्म पथ पर

1.2.1 साहित्यिक रचनाधर्मिता

1.2.2 गद्य–पद्य के विविध रूपों की रचना

1.2.3 साहित्यिक एवं सामाजिक क्षेत्र में कार्य

1.2.4 साहित्यिक पुरस्कार एवं सम्मान से अलंकृत

द्वितीय अध्याय : डॉ. स्वर्णलता का काव्य : संक्षिप्त सर्वेक्षण

2.1 डॉ. स्वर्णलता की काव्य–कृतियाँ

2.2 डॉ. स्वर्णलता के काव्य की प्रवृत्तियाँ

2.3 प्रवृत्ति प्रकाशन के पक्ष

2.3.1 सकारात्मक

2.3.2 नकारात्मक

तृतीय अध्याय : डॉ. स्वर्णलता के काव्य में संवेदना का स्वरूप एवं मानवीय मूल्यों की अवधारणा

3.1 संवेदना का स्वरूप : अर्थ एवं परिभाषा

3.1.1 संवेदना का निर्माण

3.1.2 संवेदना के प्रकार

3.1.3 संवेदना का मनोवैज्ञानिक रूप

3.1.4 संवेदना, सहानूभूति बनाम 'स्व' अनुभूति

3.1.5 रचनाकार की संवेदना का वैशिष्ट्य

3.2 मानवीय मूल्यों का अर्थ एवं परिभाषा

3.2.1 मूल्य और साहित्य

3.2.2 शाश्वत मूल्य एवं सामयिक मूल्य

3.2.3 मानवीय संवेदना एवं मूल्यों में पारस्परिक संबंध

चतुर्थ अध्याय : डॉ. स्वर्णलता के काव्य में मानवीय संवेदना के संदर्भों का अनुशीलन

4.1 मानवीय संवेदना का परम्परागत एवं आधुनिक स्वरूप : अन्तःसंबंध एवं अन्तर्विरोध

4.2 नारी विषयक संवेदना

4.3 पुरूष विषयक संवेदना

4.4 दलित विषयक संवेदना

4.5 सौन्दर्य एवं प्रेम विषयक संवेदना

4.6 प्रकृति विषयक संवेदना

4.7 समकालीन यथार्थ विषयक संवेदना

4.8 जीवन मूल्य विषयक संवेदना

4.9 लोक संस्कृति विषयक संवेदना

4.10 सामयिक समस्या विषयक संवेदना

4.11 युगबोध

4.11.1 सामाजिक संवेदना

4.11.2 राजनीति संवेदना

4.11.3 आर्थिक संवेदना

4.11.4 वैयक्तिक संवेदना

4.11.5 दार्शनिक संवेदना

4.11.6 राष्ट्रीय प्रेम संवेदना

4.11.7 मनोवैज्ञानिक संवेदना

4.11.8 पर्यावरणीय संवेदना

पंचम अध्याय : डॉ. स्वर्णलता के काव्य में भाषा और शिल्प

5.1 काव्य की संप्रेषणीय शक्ति

5.1.1 काव्य शक्ति

5.1.2 भाषायी शक्ति

5.2 मुहावरे और लोकोक्तियां

5.3 छन्द–मुक्त भाषा

5.4 बिम्ब–विधान

5.5 रूपक

5.6 फैंटेसी

5.7 प्रतीक योजना

5.8 काव्य–गुण

षष्ठम् अध्याय : डॉ. स्वर्णलता का लेखन कार्य : एक सर्वेक्षण

6.1 प्रमुख निबंधों का रचनात्मक संदर्भ

6.2 प्रमुख कहानियों का रचनात्मक संदर्भ

6.3 काव्य में अभिव्यक्त यथार्थ भाव

6.4 युगीन संवेदना और लेखकीय निष्कर्षों का अनुशीलन

सप्तम् अध्याय : उपसंहार

List of References Cited

8. परिशिष्ट ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि (शोध प्रबन्ध)–1975, विवेक प्रकाशन, जयपुर
2. रोशनियों के सैलाब (निबंध संग्रह), निर्मल प्रकाशन, जयपुर 1987
3. का से कहूँ (कविता संग्रह), प्रेरणा प्रकाशन, जयपुर 1988,
4. आहत टहनी (काव्य संग्रह), रूपा प्रकाशन, जयपुर 1996
5. अनुगूंप्प (काव्य संग्रह), पिंकसिटी प्रकाशन, जयपुर 2004
6. अहसास अपने–अपने (कहानी संग्रह), प्रीति प्रकाशन, जयपुर 2005
7. थार के मध्य (काव्य संग्रह), गोविन्द प्रकाशन, जयपुर 2009

सहायक ग्रंथ

डॉ. रामवीर सिंह	नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीति संघर्ष–प्रथम 1985, धरती प्रकाशन, गंगाशहर, बीकानेर
डॉ. ओमवती सक्सेना	प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों में वर्ग संघर्ष – सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर–1986
डॉ. शेखर शर्मा	समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक
डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–2005
डॉ. बी.के. अब्दुल अलील	समकालीन हिन्दी उपन्यास समय एवम् संवेदना– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–2006

राजेन्द्र यादव	कहानी : स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–1988
भगवत शरण उपाध्याय	विश्व साहित्य की रूपरेखा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली–1973
डॉ. गणेश खरे	आधुनिक प्रगति काव्य अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर–1965
डॉ. प्रभात	मीरा बाई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई–1966
अगरचन्द नाहटा	प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा, भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर–1962
डॉ. सुदर्शन सिंह मजीठिया	संत साहित्य, रूपकमल प्रकाशन, दिल्ली–1962
श्री अवध प्रसाद वाजपेयी	टैगोर और निराला, सुगवाणी प्रकाशन, कानपुर–1965
डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी	हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई
पं. चन्द्रकांत बाली	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली–1962
के.एस. मीणा	मैथिलीशरण गुप्त और वल्लेलाल का तुलनात्मक अध्ययन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली–1966
डॉ. महीप सिंह	गुरू गोविन्दसिंह और उनकी हिन्दी कविता, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
डॉ. रामजीलाल 'सहायक'	कबीर दर्शन, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय–1962
डॉ. बलबीर सिंह 'रत्न'	हिन्दी छायावादी कविता का कला विधान, ानल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
मधुर मालती सिंह	आधुनिक हिन्दी काव्य में विरह भावना, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली–1963

डॉ. उर्वशी सूरती — आधुनिक हिन्दी कविता में मनोविज्ञान, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर–1966

डॉ. प्रतापसिंह चौहान — हिन्दी काव्य और अरविन्द दर्शन, युगवाणी प्रकाशन, कानपुर–1973

डॉ. प्रेमनारायण टंडन — निराला व्यक्तित्व एवं कृतित्व, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ–1962

डॉ. कुमारी शांति श्रीवास्तव — छायावादी काव्य और निराला, ग्रन्थम, कानपुर–1966

डॉ. रामखिलावन तिवारी — माखनलाल चतुर्वेदी–व्यक्ति और काव्य, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर–1966

विश्वम्भर नाथ उपाध्याय — पंत जी का नूतन काव्य और दर्शन, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा

राहुल सांकृत्यायन — दक्षिणी हिन्दी काव्य धारा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना

पत्र–पत्रिकाएं :

1. राजस्थान पत्रिका (दैनिक) – पत्रिका समूह, जयपुर संस्करण
2. दैनिक भास्कर, (दैनिक) – भास्कर समूह, जयपुर संस्करण
3. दैनिक नवज्योति (दैनिक) – नवज्योति समूह, जयपुर संस्करण
4. जनसत्ता (दैनिक) – जनसत्ता, नई दिल्ली
5. मधुमति (मासिक) – राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
6. आजकल (मासिक) – प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
7. वसुधा (त्रैमासिक) – प्रगतिशील वसुधा, भोपाल (मध्यप्रदेश)
8. आलोचना (त्रैमासिक) – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. ज्ञानोदय (मासिक) – भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
10. कथादेश (मासिक) – सहयात्रा प्रकाशन, नई दिल्ली
11. हंस (मासिक) – अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली
12. पांखी (मासिक) – इंडिपेंडेट मीडिया इनिशिएटिव सोसायटी, नोएड़ा (उत्तरप्रदेश)

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor
Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. ...Hemlata....Bariya on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have ....05.............. (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ....06................. (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

28/5/2016

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. ......Hemlata....Bariya for research work if he/she is registered for Ph.D.

28.5.16
आचार्य

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

28.5.16

Signature of the Head, Department with date